अध्याय 17

राजस्थान एवं दिल्ली सल्तनत

पृथ्वीराज चौहान

जैसा कि हम पिछले पाठ में पढ चुके हैं कि सम्राट हर्ष की मृत्यु के पश्चात् भारत की राजनीतिक एकता समाप्त हो गई। भारत के विभिन्न भागों में स्वतंत्र राज्य बन गए। इन नए राज्यों में अपनी प्रभुता स्थापित करने के लिए संघर्ष छिड़ गया। इस कारण भारत राजनैतिक और सैनिक दृष्टि से कमजोर हो गया। इस राजनीतिक अस्थिरता का लाभ उठाकर बाहरी आक्रमणकारियों ने भारत पर हमले किए।

तुर्की आक्रमणकारियों में गजनी के महमूद गजनवी ने भारत पर 17 बार आक्रमण किए। इन आक्रमणों में महमूद ने मंदिरों को तोड़ा और भारत से अपार धन–संपत्ति लूट कर ले गया। उसने 1025 ई. में गुजरात के प्रसिद्ध सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण किया और मंदिर को तोड़–फोड़ कर प्रचुर मात्रा में धन लूट कर ले गया। महमूद के आक्रमणों से भारत की संस्कृति के प्रतीक कई मंदिर और स्मारक नष्ट हो गए।

महमूद गजनवी के बाद गौर प्रदेश के मुहम्मद गौरी ने भारत पर आक्रमण किए और भारत में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना का बीजारोपण किया। गौरी ने भारत में कई लड़ाइयाँ लड़ी, परन्तु उसके अजमेर के शासक पृथ्वीराज चौहान के साथ लड़े गए तराइन के युद्ध महत्वपूर्ण रहे। तराइन के प्रथम युद्ध में गौरी बुरी तरह पराजित हुआ और भाग गया। किन्तु तराइन के दूसरे युद्ध में पृथ्वीराज चौहान हार गया। भारत के इतिहास में यह एक निर्णायक युद्ध था। इस विजय के बाद विदेशी आक्रमणकारी तुर्कों को भारत में शासन–सत्ता प्राप्त करने का अवसर मिल गया। भारत में गौरी का अन्तिम अभियान 1206 ई. में खोखरों के विरूद्ध था। यह अभियान समाप्त कर गौरी जब लौट रहा था तो झेलम के किनारे खोखरों ने उसकी हत्या कर दी।

मुहम्मद गौरी के कोई पुत्र नहीं था। उसकी अचानक मृत्यु से उसके सेनापतियों और सूबेदारों में सत्ता प्राप्ति के लिए संघर्ष शुरू हो गया। इस संघर्ष में गौरी का गुलाम और सूबेदार कुतुबुद्दीन ऐबक विजयी हुआ। इसके साथ ही भारत में प्रथम मुस्लिम शासन की स्थापना हुई।

दिल्ली सल्तनत की स्थापना 1206 ई. में हुई और 1526 ई. में हुए पानीपत के प्रथम युद्ध में इब्राहिम लोदी की पराजय तक यह सल्तनत राज चला। इस दौरान विभिन्न राजवंशों ने दिल्ली पर राज किया, जिनमें दास वंश, खिलजी वंश, तुगलक वंश, सैयद वंश और लोदी वंश प्रमुख हैं। इन वंशो को राजस्थान से निरन्तर चुनौती मिलती रही।

हम्मीरदेव चौहान

हम्मीर रणथम्भौर के चौहान शासकों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण शासक था। इसके बारे में हमें नयचन्द्र सूरी कृत 'हम्मीर महाकाव्य', जोधराज कृत 'हम्मीर रासो' आदि ग्रन्थों से जानकारी मिलती है। 1282 ई. में वह अपने पिता जैत्रसिंह के जीवित रहते हुए ही गद्दी पर बिठा दिया गया। हम्मीर महत्वाकांक्षी

शासक था और उसके गद्दी पर बैठने के समय दिल्ली सल्तनत में अराजकता फैली हुई थी। ऐसी स्थिति में दिल्ली के शासकों की ओर से निश्चिंत होकर हम्मीर ने अपनी विजय यात्रा प्रारम्भ की। उसने 1291 ई.से पूर्व तक दिग्विजय करके अपनी सीमा व शक्ति में अभिवृद्धि कर ली थी। उसने कई राज्यों को जीतकर अपने साम्राज्य का अंग बनाया और कई राज्यों से केवल कर ही लिया।

हम्मीरदेव चौहान

हम्मीर ने भीमरस के शासक अर्जुन, धार के परमार शासक और मेवाड़ के शासक समर सिंह को हराकर राजस्थान में अपना दबदबा स्थापित कर लिया। मेवाड़ के बाद वह आबू, वर्धनपुर (काठियावाड़), पुष्कर, चम्पा, त्रिभुवनगिरी होता हुआ स्वदेश लौटा। इन विजयों से राजस्थान में रणथम्भौर के चौहानों की राजनीतिक प्रतिष्ठा बढ़ गई।

हम्मीर के इस बढ़ते कद के कारण खिलजी वंश का संस्थापक जलालुद्दीन खिलजी रणथम्भौर की ओर आकर्षित हुआ। 1291 ई. में जलालुद्दीन ने झाईन के दुर्ग पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया और दुर्ग की शिल्पकला और मंदिरों को काफी क्षति पहुँचाई। इस जीत के बाद जलालुद्दीन रणथम्भौर की ओर बढ़ा। हम्मीर ने दुर्ग में रसद आदि का प्रबंध कर सुरक्षात्मक रणनीति द्वारा सुल्तान का प्रतिरोध किया। जलालुद्दीन को इस आक्रमण में काफी दिनों के प्रयास के बाद भी सफलता नहीं मिली तो उसे युद्ध बंद करके वापस दिल्ली लौटना पड़ा। सुल्तान के लौटते ही हम्मीर ने झाईन के दुर्ग पर पुनः अधिकार कर लिया। 1292 ई. में जलालुद्दीन ने फिर रणथम्भौर को जीतने का प्रयास किया किन्तु वह सफल नहीं हो सका।

1296 ई. में अपने चाचा जलालुद्दीन की हत्या कर अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली का सुल्तान बना। अलाउद्दीन अत्यन्त महत्वाकांक्षी शासक था और सम्पूर्ण भारत को जीतने की लालसा रखता था। दिल्ली के निकट सामरिक महत्व के रणथम्भौर के अभेद्य दुर्ग को जीतने के लिए अलाउद्दीन लालायित था। हम्मीर ने सुल्तान के कुछ शत्रुओं को भी अपने यहाँ शरण दे रखी थी, इससे अलाउद्दीन बहुत क्रोधित हुआ।

रणथम्भौर पर आक्रमण

सुल्तान के आदेश पर उलुग खाँ और नुसरत खाँ सेना लेकर रणथम्भौर की ओर बढ़े। दोनों की संयुक्त सेना ने झाईन की ओर से रणथम्भौर पर आक्रमण किया। सेना ने आसानी से झाईन पर अधिकार कर लिया और जी भर कर नगर को लूटा। हम्मीर के आदेश पर राजपूती सेना झाईन की ओर बढ़ी तथा तुर्की सेना को खदेड़ दिया। तुर्की सेना ने जवाबी हमला किया और रणथम्भौर पर घेरा डाल दिया। रणथम्भौर दुर्ग की प्राचीर से राजपूती सेना के प्रहारों से नुसरत खाँ बुरी तरह घायल हो गया और मारा गया। राजपूती सेना ने दुर्ग से निकलकर तुर्की सेना पर जोरदार हमला किया तो उलुग खाँ को अपने प्राण बचाने के लिए भागना पड़ा व उसकी सेना भी बिखर गई।

अब अलाउद्दीन खुद एक विशाल सेना लेकर रणथम्भौर आया। लगभग एक वर्ष तक सुल्तान रणथम्भौर दुर्ग पर घेरा डाले रहा, पर उसे कोई सफलता नहीं मिली। सैन्य क्षेत्र में सफलता नहीं मिलने पर अलाउद्दीन ने छल–कपट से दुर्ग को जीतने के प्रयास शुरू कर दिए। सुल्तान ने संधि वार्ता के बहाने हम्मीर के सेनापतियों को बुलाया और उन्हें प्रलोभन देकर अपनी ओर मिला लिया। उधर किले में अब रसद सामग्री खत्म हो रही थी और जो बची थी उसमें अलाउद्दीन ने हड्डियों का चूरा मिलवाकर अपवित्र कर दिया। जल स्रोतों को भी अपवित्र करवा दिया। ऐसी स्थिति में भूखे–प्यासे राजपूत सैनिक केसरिया वस्त्र पहन कर दुर्ग से बाहर आ गए और शत्रु से भिड़ गए। दिल्ली की विशाल सेना के सामने राजपूती सेना टिक न सकी। हम्मीर वीरतापूर्वक लड़ता हुआ मारा गया। 1301 ई. में अलाउद्दीन का रणथम्भौर पर अधिकार हो गया।

हम्मीर विद्वानों व कलाकारों का आश्रयदाता था। वह शूरवीर योद्धा व कुशल सेनानायक था। अलाउद्दीन ने सैनिक बलबूते पर नहीं, बल्कि छल–कपट से रणथम्भौर को जीता था। हम्मीरदेव ने 17 युद्ध किए थे, जिनमें से वह 16 युद्धों में विजयी रहा था। राजा हम्मीरदेव का नाम इतिहास में स्मरणीय रहेगा।

रावल रतनसिंह

1302 ई. में रावल रतनसिंह मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़ में राजसिंहासन पर बैठा। एक वर्ष के भीतर ही अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया। मेवाड़ के बढ़ते हुए प्रभाव, साम्राज्य विस्तार की लालसा, दुर्ग के सामरिक महत्व आदि के कारण अलाउद्दीन ने चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया।

अलाउद्दीन एक विशाल सेना के साथ दिल्ली से रवाना हुआ और चित्तौड़ के समीप गंभीरी और बेड़च नदियों के किनारे अपना सैनिक शिविर स्थापित किया। चित्तौड़ पर आठ माह के घेरे के पश्चात् भी अलाउद्दीन को कोई सफलता नहीं मिली। तब अलाउद्दीन ने कूटनीति का सहारा लिया एवं संधि वार्ता के लिए पहल की। संधि वार्ता के दौरान रतनसिंह को बात–चीत करते हुए अपने पड़ाव तक ले गया एवं उसे कैद कर लिया। गौरा और बादल के प्रयासों से रतनसिंह अलाउद्दीन की कैद से मुक्त हुए और वे पुनः किले में आ गए। अब युद्ध अवश्यभावी हो गया था। अतः दोनों के मध्य भीषण युद्ध हुआ। किले के भीतर रसद सामग्री भी खत्म हो गई थी और राजपूत सेना के लिए किले के भीतर से निकल कर शत्रु सेना पर टूट पड़ना आवश्यक हो गया था। राजपूत सरदारों ने केसरिया वस्त्र धारण किए और किले के द्वारा खोल दिए। रावल रतनसिंह तथा उसके सेनापति गौरा व बादल वीरतापूर्वक लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। इधर रानी पद्मिनी के नेतृत्व में विशाल संख्या में स्त्रियों ने किले के अन्दर जौहर किया। यह चित्तौड़ का पहला जौहर था। चित्तौड़ पर अलाउद्दीन का अधिकार हो गया। विजय के बाद सुल्तान ने चित्तौड़ की जनता का कत्लेआम करने का आदेश दिया। मुस्लिम सैनिकों ने जी भर कर जनता को लूटा और भव्य भवनों और मंदिरों को धराशायी कर दिया। कुछ दिनों बाद मेवाड़ का राज्य और चित्तौड़ का दुर्ग अपने पुत्र को सौंपकर अलाउद्दीन दिल्ली लौट गया।

सुल्तान के दिल्ली लौटने के बाद राजपूत वीरों ने चित्तौड़ जीतने के प्रयास जारी रखे। सरदार

हम्मीर, जो सिसोदा गाँव का था, ने 1326 ई. के आसपास चित्तौड़ को पुनः जीत लिया और मेवाड़ में 'सिसोदिया' राजवंश की नींव ड़ाली।

कान्हड़ देव

कान्हड़ देव

राजस्थान के दक्षिण–पश्चिम में जालोर स्थित है। जालोर पर चौहान वंशीय राजाओं का शासन रहा। 1305 ई. में कान्हड़ देव जालोर का शासक बना। साम्राज्य विस्तार की आकांक्षा, जालोर की महत्वपूर्ण व्यापारिक एवं सामरिक स्थिति, कान्हड़ देव के बढ़ते शक्ति प्रभाव को रोकने आदि कारणों से अलाउद्दीन जालोर को जीतना चाहता था।

अलाउद्दीन ने सोमनाथ मंदिर को ध्वंस करने तथा गुजरात विजय के लिए उलुग खाँ और नुसरत खाँ को एक विशाल सेना देकर भेजा। गुजरात जाने का सीधा मार्ग जालोर होकर गुजरता था। अलाउद्दीन ने अपनी सेना को जालोर होकर गुजरने के लिए अनुमति माँगी, जिसे कान्हड़ देव ने ठुकरा दिया। सुल्तान की सेना मेवाड़ होकर निकल गई। इस सेना ने मार्ग में पड़ने वाले गाँवों को लूटा और नष्ट–भ्रष्ट किया। गुजरात में काठियावाड़ को जीता और सोमनाथ के मंदिर तथा शिवलिंग को तोड़ डाला। इस तबाही तथा पवित्र स्थलों के ध्वंस से कान्हड़ देव काफी क्रोधित हुआ और उसने सुल्तान को सबक सिखाने का निश्चय कर लिया।

कान्हड़ देव ने गुजरात में तबाही मचाकर लौट रही सुल्तान की सेना पर भीषण आक्रमण किया और गुजरात से लूट कर लाया गया धन छीन लिया। सुल्तान ने जालोर को जीतने के लिए अपने सेनापतियों और सेना को भेजा। ऐसे ही एक संघर्ष में कान्हड़ देव का युवा पुत्र वीरमदेव मारा गया। अंततः 1308 ई. में अलाउद्दीन ने एक विशाल सेना को जालोर पर अधिकार करने के लिए दिल्ली से रवाना किया।

1308 ई. में जालोर के प्रवेश द्वार सिवाणा पर मुस्लिम सेना ने आक्रमण किया, पर उसे सफलता नहीं मिली। बाद में देशद्रोहियों की मदद से छल–कपट द्वारा खिलजी की सेना ने सिवाणा के दुर्ग को जीत लिया। इस पर कान्हड़ देव ने सभी राजपूत सरदारों का आह्वान किया। फलतः जगह–जगह खिलजी सेना पर प्रहार होने लगे। मेड़ता के पास मलकाना में राजपूत सैनिक सुल्तान की सेना पर टूट पड़े और सेनापति शम्स खाँ को उसकी पत्नी सहित बंदी बना लिया। ये समाचार जब सुल्तान के पास पहुँचे तो वह स्वयं एक विशाल सेना लेकर जालोर के लिए चल पड़ा।

जालोर पहुँचकर सुल्तान ने दुर्ग पर घेरा डाला। कान्हड़ देव ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ शत्रु का मुकाबला किया। लेकिन घेरे के लम्बे समय तक चलने से किले के भीतर मौजूद रसद सामग्री खत्म होने लगी। इससे राजपूती सेना की स्थिति कमजोर होने लगी और सुल्तान की सेना की स्थिति मजबूत होती गई। ऐसी संकटपूर्ण स्थिति में एक दहिया सरदार ने कान्हड़ देव से विश्वासघात करते हुए राज्य पाने के लालच में खिलजी सेना को एक गुप्त दरवाजे से किले में प्रवेश करवा दिया। इस विश्वासघात का पता चलने पर राजद्रोही पति को उसकी पत्नी ने तलवार से टुकड़े–टुकड़े कर मार डाला। दुर्ग में आसानी से पहुँची खिलजी सेना का कान्हड़ देव ने अपने राजपूती सैन्य सरदारों के साथ वीरतापूर्वक मुकाबला किया, किन्तु वह वीरगति को प्राप्त हुआ।

कान्हड़ देव एक शूरवीर योद्धा, देशभक्त एवं स्वाभिमानी शासक था।

महाराव शेखा

महाराव शेखा

राव शेखा पंद्रहवीं शताब्दी का एक अद्वितीय व्यक्तित्व था। उसका जन्म 1433 ई. में हुआ। कछवाहा वंशीय होने से आमेर राज्य का सम्मान बनाये रखने हेतु वह उसे वार्षिक कर देता था। आमेर शासक चन्द्रसेन शेखा के बड़े भ्राता थे। उन्हें शेखा का स्वतंत्र राज्य मान्य नहीं था और उसको किसी प्रकार आमेर की अधीनता में लाने के लिए प्रयासरत थे। राव शेखा, जो एक स्वाभिमानी व्यक्ति थे, को आमेर की अधीनता स्वीकार नहीं थी। अतः दोनों भाइयों के मध्य एक दशक तक युद्ध होते रहे। अंत में 1471 ई. के युद्ध में शेखा की विजय हुई। इसलिए चंद्रसेन को शेखा को एक स्वतंत्र शासक स्वीकार करना पड़ा।

शेखा युद्धकला में पारंगत था। इसके बाद उसने अपने आस–पास के स्थानों को हस्तगत करना शुरू किया। परिणामस्वरूप भिवानी, हिसार व अन्य अनेक क्षेत्रों पर शेखा का आधिपत्य हो गया। इनके राज्य में गाँवों की संख्या 360 तक पहुँच गई थी। इसके राज्य अमरसर का क्षेत्रफल आमेर राज्य से भी बड़ा था। राव शेखा ने शासक के रूप में धार्मिक सहिष्णुता का भी परिचय दिया। इन्हीं के प्रयासों से पठानों ने गाय के माँस को न खाने का संकल्प लिया, वे नारी अस्मिता के रक्षक थे। नारी के सम्मान को सुरक्षित रखने के लिए अपने जीवन का सन् 1488 में उत्सर्ग कर दिया। जहाँ इनकी मृत्यु हुई वहाँ उनकी यादगार में एक छतरी बनी हुई है।

महाराणा कुम्भा

महाराणा कुम्भा

महाराणा कुम्भा के शासनकाल की जानकारी 'एकलिंग महात्म्य', 'रसिक प्रिया', 'कुम्भलगढ़ प्रशस्ति' आदि से मिलती है। वह 1433 ई. में गद्दी पर बैठा। कुम्भा ने अपने शासनकाल के प्रारंभ में स्थानीय और पड़ौसी राज्यों को जीत कर अपनी शक्ति को बढ़ाया। महाराणा कुम्भा ने 1437 ई. में मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी पर भीषण आक्रमण किया और दोनों सेनाओं के मध्य सारंगपुर के पास जोरदार संघर्ष हुआ।

इस युद्ध में महमूद खिलजी की सेना को परास्त होकर भागना पड़ा। इस भागती सेना का कुम्भा ने माण्डू तक पीछा किया और महमूद को बंदी बना लिया, किन्तु 6 माह चित्तौड़ में रखने के बाद महमूद को मुक्त कर दिया। मुक्त होकर महमूद ने बार–बार कुम्भा के विरूद्ध युद्ध किए, मगर वह कभी सफल नहीं हुआ। इसके बाद कुम्भा ने गुजरात के शासक कुतुबुद्दीन और नागौर के शासक शम्सखाँ की संयुक्त सेना को तथा मालवा और गुजरात की संयुक्त सेना को हराया और अपने समय का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक बन गया।

कुम्भा एक पराक्रमी योद्धा और कुशल रणनीतिज्ञ ही नहीं था, वरन् वह साहित्य व कला का

कुम्भलगढ़ किले का एक दृश्य

महान् संरक्षक भी था। महाराणा कुम्भा का काल भारतीय कला के इतिहास में स्वर्णिम काल कहा जा सकता है। मेवाड़ में स्थित 84 दुर्गों में से 32 दुर्ग कुम्भा द्वारा निर्मित हैं। इनमें कुम्भलगढ़ का दुर्ग विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जो कि अजय दुर्ग के नाम से भी जाना जाता है। दुर्ग के चारों ओर विशाल प्राचीर है, जिसे चीन की दीवार के बाद विश्व की दूसरी सबसे लम्बी दीवार माना जाता है। इसे बुर्जियों द्वारा सुरक्षित किया गया था। महाराणा कुम्भा का 1468 ई. में स्वर्गवास हुआ।

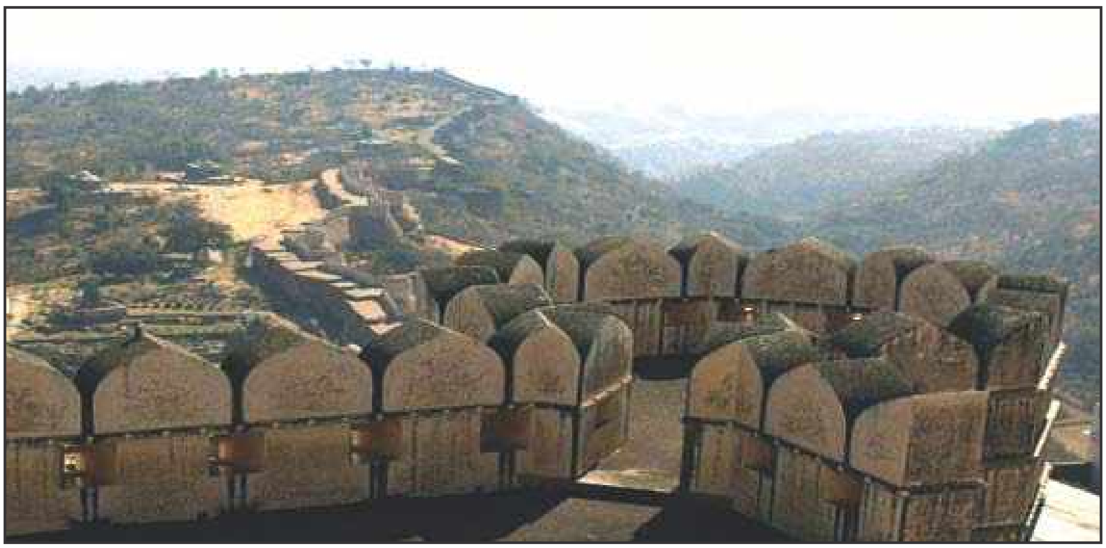

प्राचीर बुर्ज

शब्दावली

खोखर	–	वर्तमान पाकिस्तान के पहाड़ी क्षेत्र की एक जाति
शेखावाटी	–	राव शेखा द्वारा विजित क्षेत्र जिसमें वर्तमान चुरू, झुंझनू, सीकर जिले आते हैं।
कुंभलगढ़ प्रशस्ति	–	कुंभलगढ़ दुर्ग में रखा हुआ अभिलेख।

अभ्यास प्रश्न

1. स्तम्भ 'अ' को स्तम्भ 'ब' से सुमेलित किजिए –

स्तम्भ 'अ'	स्तम्भ 'ब'
1. कान्हड़ देव	अजमेर
2. हम्मीर देव	जालोर
3. महाराणा कुम्भा	रणथम्भौर
4. पृथ्वीराज चौहान	मेवाड़

2. तराइन के प्रथम युद्ध में कौन विजयी रहा?
3. मुहम्मद गौरी के बाद सत्ता प्राप्ति के संघर्ष में कौन विजयी रहा?
4. अलाउद्दीन खलजी रणथम्भौर पर आक्रमण क्यों करना चाहता था?
5. अलाउद्दीन के चित्तौड़ पर आक्रमण का संक्षिप्त विवरण लिखिए।
6. जालोर पर अलाउद्दीन खलजी के आक्रमण का वर्णन कीजिए।
7. महाराणा कुम्भा के शासनकाल की जानकारी कौन–कौन से स्रोतों से प्राप्त होती है?
8. महाराणा कुम्भा के शासन की उपलब्धियों का वर्णन कीजिए।
9. राव शेखा के जीवन से क्या प्रेरणा मिलती है?

गतिविधि–

1. सल्तनतकाल में निर्मित राजस्थान के किलों, मंदिरों व अन्य स्मारकों के चित्रों का संग्रह कीजिए।
2. दिल्ली व राजस्थान के राजवंशों के काल को तिथि वर्ष क्रमानुसार लिखो।